PRINTED BOOK

THE VEDIC PATH

Quarterly Journal of Vedic, Indological and Scientific Research
Gurukula Kangri Vishwavidyalaya,
HARDWAR

То,

If not delivered, please return to:
Dr. R. L. Varshney
Editor, Vedic Path
'Dreamland'
P. O. Gurukula Kangri-249 404
HARDWAR, U. P., INDIA.

र्तान 16-24 = 9 पेज 24×11.5 × 0.2.c.m.

लेचितभूमत्मन्वित्यैरवदद्वावि तपान्योन्यं मामवाठावंशगती

धन्मारनाविशे उनिधये वास्त देवाय वापि विद्यय - अनुयल व्य

नां बाह्य स्वतिक है। है स्वतिक स्व विविवाह्मात्याः स्वेवकारवेत्राधणायव्यास्य संविद्धां स्व हार अध्याप्रकार के में स्वास्त्र के स्वास्त्र में से स्वास्त्र में से स्वास्त्र में से से से से से से से से से नमार्चितंत्रह् नेवेचेर्महत्त्रवागमवेरतेत्त्ववावारिवेवता म्हिनां के के मिल के मान्य कि कि मान्य कि कि मान्य के कि मान्य ाहरूर्के हिर्द्रिक प्रमाणका में कि हिर्द्ध हो हिर्द्ध हो हि होविदेवनेः।क्रम्:हिराष्यातानिहिम्बलेननेविदे मा व्यादेव देव वेता सर्व प्रत्य प्रति हे हिंद के का विद्या के कि है कि स ब्रेन मन भेप हे सर्व वा वा बित में ने बित्र ने कम छ रे पू या ने । इति श्रीमविकातर प्राएण र विमाशक्षाकार नामित

80)

नित्र हास्य गानित्र क्रिक्र हिमानित्र हिमानित हिमानित्र हिमानित्र हिमानित्र हिमानित्र हिमानित्र हिमानित्र क्षित्रमाम् मित्र विश्वास्त्र विष्य विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास्त विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष् बुंहिसर्वस्थलं सर्थराये मास्नियते देवत्वत्यु नाराद्यसः वंद्याद्य का स्वाद्य त्यां विधिविषा स्वाद्य करता मन । येवे वाल्या मार्थ मकर स्विदिवा करे थ है एक द्रशाव राक्ष्माति योना मुनमानिषि:।वुद्यन राज्ञ मानि गृहीया द्रोम यं वृद्धः ७१रातमशाधिक चेत्रस्थाति क्रांतिक स्थापिक स्थाप विश्मार्थतियाने तया ४ उन्य का सम्बद्धाने वरे व त्मंग्रुस्ति ताकाकुक्ताम् विस्तित्व विश्वास्ति स्थानित जीवत्रदेवां क्रुगवाचेवा सनेतरागविष्वादी चतंत्रवृत्वत्रा

:RM

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

स्य

ते वितम् मसम्बितो २३ दह्र हु तथा मोनं का मकल्व मं गती। ता क नेविवित्रसत्रवेगतेमनस्तये। २२कातिक्रणमान्येकानवामी निवित्र तमात्रावितिषितात्मध्यानिष्यातेतथासानः राम्स्वितमानवारथे वाविज्ञा को भवता देवती रूप छा हिले। सर्वा के सम्वामी भंग तो कर्म चेव निजा चारा रात्र ए जात छा दि ए । १६ वे पमा मीततसी तुसम रेण नुराक्तो। जर लारेण संस्क्रीण नुमार्भ नुमार विराग निर्देश नक्त बत्र नते सोली मु स्वित तो एवं ते राज सो दूर साव ने दूर्य मा क्तिश्हणइष्ट्रत्वाईवितवार्तितणमित्रणमित्रामार्ने उत्यादया वा तक्रव चारित मागते वर्ष मायात राज मी दे ते न वा मी कि धूं नाह हि

म्बरास्याहार्थः हे के विस्तास्य के स्वास्त्र के स्वास्त्र स्वास्त् वन्तातस्प्रक्रवंश्राक्रत्वावाह्तस्पास्कानेनकंवपश्चितावि। वश्रकण्यतेत्रवयनेरक्ततेष्ठिशितयया।कर्णत्रजाभितो तस्याः कं उत्ताभ्या नृवान्त्रमाश्यकं नुजी वा वता से विश्व व्यामरण मुखितापीने नते क्रे ते त्यासी है न कर माविव १० मुति हा नंकिर मासं मिल गाह्य मन्सनाति तं बी विष्ठे तस्पादिसी एं मधनस्थेरेश हें चरले क्राम मानो त्रकात्मवसमुद्रातोई दुर्गा वुष्यवस्यामात्यवानिकाहितः रचन्यम् स्पवित नावन्ति। चेतीसमागतो।मदमाग्रवरीतांगोषु व्यवती बमाखवात्। 112शायरस्यरानुराजेणव्यामाहत्यसागते।नत्रकुणनेगारी

मित्रवादतः रूगद्वतिष्ठत्वव्यत्तिष्ठत्वाद्वत्यः । व वित्रपादक्षेत्रातेवद्तीयामकविके इटहरिवासर्वतिरिवि हम्मिनि प्रविक्रामिनि मिनि प्रायमिनि वित्रामान्य निष् सारकाषिते मत्याः व्राचा में धर्म समाग्राम्य व्याने सार्वे थालेष्युसगत्रवेषभगत्कारणदानत्कत्ते हिर्वास संग्रमान्ग्रमार्थन्त्रहाहमापहारिणीधरामबेद्यमानिट ताभयतास्तरम्बीभ्यासर्वतीष्यसात्येकतेषेत्रवाष् तंभश्यंकरोतिनरा मन्यात्र प्रायुक्तेन पानुतकत्यकारिश्ते मायतिस्तिति विकार स्थानित स्थानिति स्यानिति स्थानिति स्थानिति स्थानिति स्थानिति स्थानिति स्थानिति स्था लंद में तगइतिष्रामिक होनामिक मिल्रामिक कारना से वर्ण

नमाकाः सब्ते बीणित्रो नगरले कते निवत्सा हुतप्राचेन यण सामीनवाश्राणः हारसी दिवसेषात्र वाची जेन बाब्ते रेश विस्ता। प्रभान्त्य प्रतिष्मा च त्रेत्र यो जिल्ला वर्ते मान्य वेतो वृद्ध होते व भू वतः॥११॥५रातनसिहयसोद्रवंदेकारधारिले।विमानमध्रित सेतावसरोगणसेवितोत्रस्यमानोत्राध्यस्तव्यप्रदेत ष्णान्त्र भावसमायुक्ता गताना कंमना रमं ३७देव दे स्पाग्रता ग लायणमं न तमितातणाविधोतितो र ष्टाम वाविसिताववी द्गान्यष्ट्र अवावावद्ताके नमुत्यन्ति मान्ति वे गतामन ज्ञाववरा प्राक्षित नरेवनमा चिता रहा मा खबान वा चा गरा देववसादेव जयाया सावतेन इमिक्न चत्व गतंस्वामिन सव

Ti

不

ग्रहाः

होकं इद्र क्रीविजना खांत्रा केंद्र के निहनं यक्षा हमता राष मध्यतः हस्में देणसंत्रस्यत्वत्यस्य स्वयंतातानगण श्रिकंत्रज्ञात्मकेलवंत्रकंत्रकंत्रकंत्रकंत्रकंत्रकंत्रवा रहेमराज्ञ सरहात क्रिक्सिन से ति हो है से एक सि नाकं बेहनू मते शासमाना मते ने वेष्यान समक रोत्रवतास्त्रातानरेसाई तीर्नद्नदीयतेः १३ रेष्ट्रा हरदास्त्रमिक्सित्रम्लिस्तिस्तिस्तिस्तिस्ति हं मर्गित्रम्हित्राम्हितंग्रहितंग्रहितंग्रहितं वेत्।वहमान्त्राह्रदेवत्वविवास्वराण प्रस्थानम १४वकदातका मित्राप्तवं मेहापमध्यतः म्हात्या माधा CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

90

O.

गर्धायिक विद्रम् वाद्याकाता नामित्र वहीकिताने कार र्गिमवेत्।कथयस्यष्मादेननास्देवननास्ततेश्वीकस्म न बार्यानारदः विरवष्ठ क्रम्साम्बन्ध स्वामनाम् ज्याना नेपन्नियानाम्यामनेत्रतस्याः वृत्तासरम्भिक्य हर्गवराय्यनाकस्पिब्रास्पतिमयति क्रियावृते। पुरातने ब्रतस्वितस्यवित्रं प्रायतानाने र अत्यद्याति विज्ञानाना 阿宾中国在于阿阿克斯等第一种阿阿阿阿阿斯斯斯 स्येववद्याचस्रीतः सहस्रताणातभ्रववस्य तथ्यस्य त्यवितितत्तनः दशवले नेह ताले स्याद्राच्याति तय्रासि नातनरव नाजनमान मान्यान मान्यान स्थान राजन स्थान राजन व

कजिल्ला स्रहंगमब्ताना मुनमब्ते २२क्तेन चेत्रसहसा 即用的馬瓜瓜果斯馬尔馬利德的海海馬利用用 (स्थर्णकाग्रमनसामुकाव्तमेतसमावराज्जानस्य सितेवरीवित्रवेकाद्रशामवेत्रविधिक्तं श्र्यतारामव तस्य सकत् युदार सामादिवसे प्राप्त कं ममेक तुकार येत्।। उपहें में वादि यतं जा वितास म्यायम् ना वाम्यायये स्थापित क्रमंत्रत्वलं सवल्वेय्द्रतत्वामित्रवरे वेत्रेवनागयणं प्रभाएकादेनादिनप्रावेषातः स्तानसमान्येरेतरातिप्रादे स्णायकेतकभक्त उमालान्द्रपने। कंक्रमेनी विकरे प्रश वु ने ये सु विशेषतः १० सम्बद्धा न्या ते से स्थान निष्धित

त्यादित्र क्रिया हित्य हि हित्य हित् नदना तेन्छ मत्वारा में इंडिंग स्मित्र में ते कित हो हो हो है है फालात्रमणस्मानिकानिमानगर्याद्वार्यस्थित हाम् निं।१२ व्यानाम् मिन्न होरामे विश्नमें में तारा म्निस्तरामंषुराण्यस्वानं नेश्टाके नाविकार केने वयस स्ताहितरार्ह के डिकाही द्रिक्त हिल्लिहा कि तिराहित है है १८राभ उता लाल त्यु संदायह विवृती र न द न दी व ते । जा हरू छिल्लाहर हम् इराम हितान हितान हिमान हिता हिता है । ब्यानी यते मक राज्यात मुवा यं बदम ने प्रमादं कर संखेत राएतसात्कार एए देव प्रष्टे क्लिक्ता गतः। मुनिस्वा न्या

र्तित्राक्षेत्रत्र हार्तिस्मात्कार ल्ला स्वतं वित्र ब्तर्धपत्रमञ्जू अस्य स्वाधिक विकास देव्राणेकाराणेकासानुक्छा नदीवित्रवाना नेकार्यो संबुक्त का माहते तो बा द्वा महायुक्त महत्यु ल्यक्रवयदे। इत्या जस्य विकास महाम् ने ११। सन्माणहरूको वेदान है जाता है कि है के हिंदू के हिंदू में कि है के लिए हैं कि है कि ह वसेयपार्शेषु न देसः नाम्ना सा से ने त्या ता ति पी ना न न्ताति विः रतिप्रकाव्यन्यः कानान्यतेन त्रमञ्जाति न सुयस्य वनस्य कतं प्रायातिमानवः ४ यदा च मुक्ताहार

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

सेत्।कुंभाग्तिहित्रमहायातिक यापि महर्ने मे तरहा। त्राष्ट्रधमहास्थाहर्म गळवण्यामहाइडिला तर्मात्र मां रे स्पाद य सित्य की ता के में महोते दे तो न देता प्र प्रति पत तरागेस्याविष्यत्वातसंद्रम्बच्याविष्यान्रश्रद्यात्सरेदेतं दं मं दालण बेर्वार्गां के में नमह र में बुमहारामानिस परोतानश्यानेनिविधानाराम षु यो सहस्रातः। कर्ते क्षेत्रतितिक व्यक्ति इट्ट्रियाची मा सिम्ब्रीस्क्रिया क्रम्स्तराक्तेव्तेस्वित्रतीवम्बर्कनंदनः ३४ यार्सितातितालंकापोतस्यानिहतारएं। अनेनविद्यना वत्रयक वंते नगवतंत्रथङ्गलोकेनयसेवावरकेकस

77

व

;RIJ

नमानवकायकाच्च चित्रेषतेः १२ वसन मान्य माना मध्येहित मार्थित के हिल्ला है। यदिमहामहित्य ्नप्रमास्य प्रमास्य प वाहो निस्पाद्या वा देव ता चे न १५ वहा स्वाकित के ते ते से हेर्ना स्वाप्त हेर्ना विस्वास है से स्वाप्त स्व स्वाप् भिः १५कालातस्मानस्मित्रिकः किषितेन्यभावः म्राज्य स्वासित क्षेत्र कि के कि कि प्रकट् हिंदा ता शासका श्रिक्त किंग्र मिल्लिम मिलिक मामिलिक

तिषि: प्रतत्यासाता सर्वती प्रास्ताती मेवति मात वः। वानं सह सगणितंतयावे विव्यातने हृता में सणायवात स्तिहत्तवः दःस्ति। तथा चत्रकाहा द्राय व्यापत्ये च स्ति। तथा चत्रकाहा द्राय व्यापत्ये च स्ति। तथा चत्रकाहा द्राय व्यापत्ये च स्ति। तीनाममाक्राक्तामवेषायहराति चिः। सहमम्भक्तेषायस चंदा कादि वाव ७: हतन्ता काविका निका है दे तस्याम अवस् मितिन विकास मार्थित है कि स्थाप्त मिति है कि स्थाप्त मिति है। तरामा ज महाप्रामक हिमाजा ज ना जिने । चाददा तितिले प्र संग्रितित्तृहः काष्य्रित हे ति हि है कि इस हि है कि हि है कि हि है कि है स्ति। सगरणककस्ति तहाँ शिमारे लगारिया। शा तस्यामारुशितः कहमरत्वा नविन्यभुद्यवाचिकान्मा १

宗

वनानीमग्रवहाकितग्रंताः।त्राक्षित्राः।त्रविवित्रकातेका नागनानाम्यारिष्णारहम्म में की नाम विद्यायवरो वेहम हम भूरतिक राष्ट्रिक राष्ट्रिक विकास स्थानिक स् महरूपायित्र मामहाप्तिकार्या हिमान्य हि कासामिहिसीसराउ० सर्वाय हरायाना से हमबी पाज नान नी।तसाम् रेस्पितो बुह्मान रहे बहिरः सरा रास्ट धे सम गवात्तर्देः लेखितः वरमे मराः। ता व्यक्तमने वः सर्वेषु सावा बरेब ता: ३२ वर्ण ब्रह्म से स्केट: वृष्य व महत्तराया व्यानायत्यः सर्वेष्कते व्ययस्थितः उर्धवदेवमयी खेळा धात्रावेकयतामया। तसात्यस्वतमात्रः आविद्यम

देवसम्बग्धंताणहरणहरणहरणहरणहरणहरणहरणहरणहरणहरणहरू

क्रिकेष्ठ र तक्ता का माने का दिल्ला का कार्य का जासहस्रकतंत्रमत्विष्टिकाहित्वात्रमहाभागय षेत्रम्मत्रिते म्यामर्को महावृद्धे सर्ववाववूण्य गतः रः एक एं इन् रामान है साम इस ति स्व है के किए से स्व है के स्व त्मारसिर्धिः स्ट्रम्सिर्मा इत्यान्य स्वयान्य स्वयाय स्याय स्वयाय स्याय स्याय स्वयाय स्वयाय स्वयाय स्वयाय स्वयाय स हिंद्रस्यन्तः सः भूमोनियवातह २३ तस्माहिरोः सम्स्यातः स्व वंधात्रीनमेमहास्यावायुराष्यहरः करमारे लेमितः २४सर्वाने व व द्याणमा दि रोह पुन्नोति ता बुह्मा एमस्त 院的农民政府后与宋明武元(张广文记:成夏讯文书聚为东西) हिरिष्ठेयाः। ता ह्याते अहाभाग वर विस्त्र यमा गताः २ १।।

तत्रह्वाधर्वत्रः एउट्टि . Gurukdi Kangri University-Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

छार हो कि की की कि हो साम कि है के सम्बाहत कि सिमार साम कि है है जि नवासिक के ते वास्ति के इस मिल्लिस मिल्लिस मिल्लिस मिल्लिस मिलिस मि यतेदः त्रम्माद्वा कालाम् स्थिते व दे पुष्प कारमा यदा पर्मदेसा 家文的来说的表表是所有作品的情况。 我们是我们是我们的,我们的是我们的是我们的是我们的是我们的是一个。 तमस्मा। एथा ग्रामई की संयुक्त मार्म मार्थित एवं एथा सिक्सित निर्मक्ते के सहस्र करेत से स्थापत हैं के जिले विद्या व तो वतम गंग्रहात्रकाम् त्रिक्तिहात्राह्म हात्रहाल हार्य हार हार्य हा व्रतास्माविधिवृहिविष्ठिक् क्रबेमवेत्। केत्रं त्राकेने मस्तागरेवत व्यक्तिताभाक्तव्यानेकव्यक्तित्रक्ष्याम् तः। अर्थान

कियगयलार्ध स्वयमन्।केमनानित्र मानीमः कस्म कार्णतात्राहे के अध्यक्त अध्यक्त कार्य वाग्वाचायः कर्तस्येम् ताता अवना नां द्रवर्गः। विस्तत विद्याप्रेतः सिहिद्यस्मातनः ३६त का, त्यादेवदेवेचाः भा षणः वृह्मणः सताः भ्रमादिनिधः नदेवसातुतः अप्रमुद्रः जाय क्ष्यः क्रन्यः गनमाभूतातातातातास्त्रायकात्रात्रम् तत्र रमात्रीनाम् स्तायनमातित्यनमातायनमानमः रणनमा मायायार् छल्तमग्रामेमहात्मनानमा देवादिवायमा क्राह्म स्वातिह स्वाति

मुइह्मान्यम् क्रिक्रम् मुग्रं माह्याहित्या देनवापुनः हिमात्रवाचे क्रिके क्रिके क्रिके स्थान हो स्थान हो स्थान है के शिक्ष करते हैं स्थान है स्था स्थान है महोत्रिवस्करसंयुतः। वंचरत्वस्रोवेतिहेळ् मंदादिकास्तेयव्य वात्रध्यतं पर्देशवमा राज्यतं कृतिक व्यात्रिय स्वात्र में त्रात्र स्वात्र स्वात रियात्र साम हो मार्ग के हिल्ला हो है कि हो है कि हो है सि कि साम हो है सि नाम्रमाविकेवकायनमः करोजन्तीविष्यस्थिकेद्वेणायनन नियुक्तिहास अस्य स्वाप्य स्वाप कं सम्बाह के हैं। सम्मिन्य के बार सम्बन्ध के समित्र के उमाल्यसम्गाराम्बेः॥हत्रमामाविशेकिमध्येयासदेवायतारि

CC-0. Gurukul Kangri University Haridwar Collection. Digitized by S3 Foundation USA

25

3

अस्तिम् इति क्षेत्र विक्रित्य का विक्र म्युक् वृतस्यास्य विकास समित्र यात्याते यावर ध्वेति भृतवे धावनवृत्रकंषवनत्वसातिकंग्रोगंस्यापावित्रिनेनगन्यस्तिनि न्त्रमक्तिदानुस्दान्ब्रधार्वकान्य। अपराहेत्तः सानंबिधितकः वी इ.धः। नक्तितरागे क्षेत्रगृहेत निषता सत्तान्। पर्कितिका ग्रहणपूर्व ततःसातंकारयेत्। मूलकोतेरणकातेविद्यक्तातेवसधरे। भगम्निकं हरमेवी वंत्र-सक्तारिश्ताज्ञिता तिवावः सर्व यो निसंप्त्री बनेय द्वार द मं अधिक देश है ज जानी के र सामे वन ये न मः। सा तो ह सर्व ती खेल ह व्यवल्ड्याप्यनदाव्यवमतेषुद्दस्यानं नमेमवेत्द्रिक्तानं नः